14

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-III

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने देवी ललिता के 1000 नामों में से कुछ नामों के विषय में जाना। इस पाठ में उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सूक्त में दिये श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- देवी ललिता की विशेषताएं बता पाने में; और
- उनके नामों का अर्थज्ञान कर पाने में ।

14.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (51-64)

दुष्टदूरा दुराचार–शमनी दोषवर्जिता ।

सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक–वर्जिता ।। ५१।।

193) दुष्टदूरा – वह जो बुरे पुरुषों से बहुत दूर रहती है

194) दुराचारशमनी – वह जो बुरी प्रथाओं को नष्ट करता है

195) दोषवर्जिता – वह जिसके पास कुछ भी बुरा नहीं है

196) सर्वज्ञा – वह जो सब कुछ जानती है

197) सान्द्रकारुणा – वह जो दया से भरा हो

198) समानाधिकवर्जिता – वह जो अतुलनीय है

सर्वशक्तिमयी सर्व–मङ्गला सद्गतिप्रदा ।

सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र–स्वरूपिणी ।। ५२।।

199) सर्वशक्तिमयी – वह जिसके पास सारी ताकत है

200) सर्वङ्गला – वह जो सबका भला करने वाली है

201) सद्गतिप्रदा – वह जो हमें अच्छी राह दे

202) सर्वेश्वरी – वह जो सभी की देवी है

203) सर्वमयी – वह जो हर जगह है

204) सर्वमन्त्रस्वरूपिणी – वह जो सभी मन्त्रों का व्यक्तिकरण है

सर्व–यन्त्रात्मिका सर्व–तन्त्ररूपा मनोन्मनी ।

माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ।। ५३।।

205) सर्वात्रात्मिका – वह जो सभी यन्त्रों (तावीज) का प्रतिनिधित्व करती है

206) सर्वतन्त्ररूपा – वह भी सभी थन्थ्रों की देवी है जो पूजा की विधि है

207) मनोन्मनी – वह जो विचारों और कार्यों के मानसिक विचारों का परिणाम है

208) माहेश्वरी – वह महेश्वरा (सब कुछ भगवान) की पत्नी है

209) महादेवी – वह माहे देव (सभी देवों के देव) का संघ है

210) महालक्ष्मी – वह जो धन की देवी महालक्ष्मी का रूप धारण करती है

211) मृडप्रिया – वह मृदा को प्रिय है (भगवान शिव का एक नाम)

महारूपा महापूज्या महापातक–नाशिनी ।

महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ।। ५४।।

212) महारूपा – वह जो बहुत बड़ी है

213) महापूज्या – वह जो महान लोगों द्वारा पूजा जाने लायक है

214) महापातकनाशिनी – वह जो प्रमुख दुराचारियों का नाश करता है

215) महामाया – वह जो महान भ्रम है

216) महासत्त्वा – वह बहुत ज्ञानी है

217) महाशक्ति – वह जो बहुत बलवान है

218) महारातिः – वह जो बहुत खुशी देता है

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला ।

महाबुद्धि महासिद्धि महायोगेश्वरेश्वरी ।। ५५।।

219) महाभोगा – वह जो बहुत सुख भोगता है

220) महैश्वरर्या – वह जिसके पास बहुत धन है

221) महावीर्या – वह जिसके पास बड़ी वीरता है

222) महाबला – वह जो बहुत मजबूत है

223) महाबुद्धि– वह जो बहुत बुद्धिमान है

224) महासिर्द्धि – वह जिसके पास महान सुपर प्राकृतिक शक्तियाँ हैं

225) महायोगेश्वरेश्वरी – वह जो महान योगियों की देवी है

महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना ।

महायाग–क्रमाराध्या महाभैरव–पूजिता ।। ५६ ।।

226) महातन्त्रा – वह जो सबसे बड़ा थांटरा स्तोत्र है

227) महामन्त्रा – वह जिसके पास सबसे बड़ा मन्त्र है

228) महायन्त्रा – वह जिसके पास सबसे बड़ा यन्त्र है

229) महासना – वह जिसके पास सबसे बड़ी सीट है

230) महायागक्रमाराध्या – वह जो महान यज्ञों (भवन याग और चिदाग्नि कुंड याग) करके पूजे जाने चाहिए

231) महाभैरवपूजिता – वह जो महान भैरव द्वारा पूजित है

महेश्वर–महाकल्प–महाताण्डव–साक्षिणी ।

महाकामेश–महिषी महात्रिपुर–सुन्दरी ।। ५७ ।।

232) महेश्वरमहाकल्पमहाताण्डवसाक्षिणी – वह जो दुनिया के अंत में महान स्वामी द्वारा किए जाने वाले महान नृत्य का गवाह होगा

टिप्पणी

233) महाकामेशमहिषी – वह महान कामेश्वर की प्रमुख पत्नी है

234) महात्रिपुरसुन्दरी –वह जो तीन महान शहरों की सुंदरता है

चतुःषष्ट्युपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी ।

महाचतुः–षष्टिकोटि–योगिनी–गणसेविता ।। ५८।।

235) चतुःषष्ट्युपचाराढ्या – वह जो चौंसठ यज्ञों के साथ पूज्य हौ

236) चतुःषष्टिकलामयी – वह जो चौंसठ खंड हैं

237) महाचतुःषष्टकोटियोयिनीगणसेविता – वह जो चौरासी करोड़ योगिनियों द्वारा नौ विभिन्न वर्णों में पूजी जा रही है

मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल–मध्यगा ।

चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र–कलाधरा ।। ५९।।

238) मनुविद्या – वह जो मनु द्वारा प्रतिपादित श्री विद्या का व्यक्ति है

239) चन्द्रविद्या – वह जो चंद्रमा के रूप में श्री विद्या की पहचान है

240) चन्द्रमण्डलमध्यगा – वह जो चंद्रमा के चारों ओर ब्रह्मांड के केंद्र में है

241) चारुरूपा – वह जो बहुत सुंदर है

242) चारुहासा – वह जो एक सुंदर मुस्कान है

243) चारुचन्द्रकलाधरा – वह जो सुंदर अर्धचंद्र पहनती है

चराचर–जगन्नाथा चक्रराज–निकेतना ।

पार्वती पद्मनयना पद्मराग–समप्रभा ।। ६०।।

244) चराचरजगन्नाथा – वह जो चलती और अचल चीजों का स्वामी है

245) चक्रराजचिकेतना – वह जो श्री चक्र के बीच में रहता है

246) पार्वती – वह जो पहाड़ की बेटी है

247) पद्मनयना – वह जिसके पास कमल के समान नेत्र हों

248) पद्मरागसमप्रभा – वह जो पद्म राग गहना जितना चमकता है

पञ्च–प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म–स्वरूपिणी ।

चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान–घनरूपिणी ।। ६१।।

249) पञ्चप्रेतासनासीना – वह जो पाँच शवों के आसन पर बैठती है (ये ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईसा और सदाशिव हैं, उनकी शक्ति (संघ) के बिना)

250) पञ्चब्रह्मस्वरुपिणी – वह जो पाँच ब्रह्माओं की पहचान है (वे अपने शक्ति के साथ अंतिम नाम में उल्लिखित देवता हैं)

251) चिन्मयी – वह जो हर बात में व्यक्तीकरण की क्रिया है

252) परमानन्दा – वह जो बहुत खुश है

253) विज्ञानघनरूपिणी – वह जो विज्ञान पर आधारित ज्ञान की पहचान है

ध्यान–ध्यातृ–ध्येयरूपा धर्माधर्म–विवर्जिता ।

विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ।। ६२।।

254) ध्यानध्यातृध्येयरूपा – वह जो ध्यान का पात्र है, वह जो ध्यान करता है और जो ध्यान किया जा रहा है

255) धर्माधर्मविवर्जिता – वह जो धर्म (न्याय) और धर्म (अन्याय) से परे है

256) विश्वरुपा – वह जिसके पास ब्रह्मांड का रूप है

257) जागरिणी – वह जो हमेशा जागता है

258) स्वपनती – वह जो हमेशा सपने की स्थिति में है

259) तैजसात्मिका – वह थैजासा का रूप है जो माइक्रोबियल अवधारणा है

सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था–विवर्जिता ।
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ।। ६३।।

260) सुप्ता – वह जो गहरी नींद में है

261) प्राज्ञात्मिका – वह जो जाग रहा है

262) तुर्या – वह जो ट्रान्स में है

263) सर्वावस्थाविवर्जिता – वह जो सभी राज्यों से ऊपर है

264) सृष्टिकर्ता – वह जो बनाता है

265) ब्रह्मरूपा – वह जो परम की पहचान है

266) गोप्त्री – वह जो बचाता है

267) गोविन्दरूपिणी – वह जो गोविंदा का रूप है

संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधान–करीश्वरी ।
सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्य–परायणा ।। ६४।।

268) संहारिणी – वह नष्ट हो जाता है

269) रुद्ररूपा – वह जो रुद्र के रूप का है

270) तिरोधानकरी – वह जो हमसे खुद को छुपाती है

271) ईश्वरी – वह जो ईश्वर का रूप है

272) सदाशिवा – वह जो सदाशिव रूप है

273) अनुग्रहदा – वह आशीर्वाद देती है

274) पञ्चकृत्यपरायण – वह जो सृष्टि, अस्तित्व, विलीन, लुप्त और आशीर्वाद के पाँच कर्तव्यों में संलग्न है

14.2 श्री ललीता सहस्रनाम स्तोत्र (65-75)

भानुमण्डल–मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।

पद्मासना भगवती पद्मनाभ–सहोदरी ।। ६५।।

275) भानुमण्डलमध्यथा – वह जो सूर्य के ब्रह्मांड के बीच में है

276) भैरवी – वह जो भैरव की पत्नी है

277) भगमालिनी – वह जो देवी भगिनी मालिनी है

278) पद्मासना – वह जो कमल पर विराजमान है

279) भगवती – वह जो सभी धन और ज्ञान के साथ है

280) पद्मनाभसहोदरी – वह जो विष्णु की बहन है

उन्मेष–निमिषोत्पन्न–विपन्न–भुवनावली ।

सहस्र–शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ।। ६६।।

281) उन्मेषनिमिषेत्पन्नविपन्नभुवनावली – वह जो अपनी आंखें खोलकर और बंद करके ब्रह्मांड का सृजन और विनाश करता है

282) सहस्रशीर्षवदना – वह जिसके हजारों चेहरे और सिर हैं

283) सहस्राक्षी – वह जिसकी हजारों आँखें हैं

284) सहस्रपात् – वह जिसके हजारों पैर हों

आब्रह्म–कीट–जननी वर्णाश्रम–विधायिनी ।

निजाज्ञारूप–निगमा पुण्यापुण्य–फलप्रदा ।। ६७ ।।

285) अब्रह्मकीटजननी – उसने सभी प्राणियों को कृमि से भगवान ब्रह्मा तक बनाया है

286) वर्णाश्रमविधायिनी – वह जिसने समाज का चार गुना विभाजन बनाया

287) निजाज्ञारूपनिगमा – उसने वे आदेश दिए जो वेदों पर आधारित हैं

288) पुण्यापुण्यफलप्रदा – वह जो पापों और अच्छे कामों का मुआवजा देता है

श्रुति–सीमन्त–सिन्दूरी–कृत–पादाब्ज–धूलिका ।

सकलागम–सन्दोह–शुक्ति–सम्पुट–मौक्तिका ।। ६८ ।।

289 श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृतपादाब्जधुलिका – वह अपने कमल के पैरों की धूल है, जो सिंधुर वैदिक माता के बालों के भाग में भरता है

290) सकलागमसन्दोहशुक्तिसम्पुटमौक्तिका – वह जो वेदों के मोती धारण कवच में मोती के समान है

पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी ।

अम्बिकाऽनादि–निधना हरिब्रह्मेन्द्र–सेविता ।। ६६।।

291) पुरुषार्थप्रदा – वह जो हमें दान, संपत्ति, आनंद और मोक्ष का पुरुषार्थ देता है

292) पूर्णा – वह जो पूर्ण हो

293) भोगिनी – वह जो सुख भोगता है

294) भुवनेश्वरी – ववह ब्रह्मांड की अध्यक्षता करने वाली देवी हैं

295) अम्बिका – वह जो दुनिया की माँ है

296) अनादिनिधना – वह जिसके पास या तो अंत या शुरुआत नहीं है

297) हरिब्रह्मेन्द्रसेविता – वह जो विष्णु, इंद्र और ब्रह्मा जैसे देवताओं द्वारा सेवा की जाती है

नारायणी नादरूपा नामरूप–विवर्जिता ।

ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय–वर्जिता ।। ७०।।

298) नारायणी – वह जो नारायण की तरह है

299) नादरूपा – वह जो संगीत का आकार है (ध्वनि)

300) नामरूपविवर्जिता – वह जिसके पास नाम या आकृति नहीं है

301) ह्रींकारी – वह जो पवित्र ध्वनि करता है

302) ह्रीमती – वह जो शर्मीला है

303) हृद्या – वह जो दिल में है (भक्त)

304) हेयोपादेयवर्जिता – वह ऐसे पहलू नहीं हैं जिन्हें स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है

राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना ।

रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किङ्किणि–मेखला ।। ७१।।

305) राजराजार्चिता – वह जो राजाओं द्वारा राजा की पूजा की जा रही है

306) राज्ञी – वह कामेश्वर की रानी है

307) रम्या – वह जो दूसरों को खुश करता है

308) राजीवलोचन – वह जो कमल का नेत्र हैं

टिप्पणी

309) रञ्जनी – वह जो अपने लाल रंग से शिव को लाल बनाती है

310) रमणी – वह जो अपने भक्तों के साथ खेलती है

311) रस्या – वह जो हर चीज का रस पिलाती है

312) रणत्किङ्किणिमेखला – वह सोने की कमर की पट्टी पहनती है जिसमें बेल–बूटे होते हैं

रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया ।

रक्षाकरी राक्षस घनी रामा रमणलम्पटा ।। ७२।।

313) रामा – वह जो लक्ष्मी के समान है

314) राकेन्दुवदना – वह जो पूर्णिमा की तरह एक चेहरा है

315) रतिरूपा – वह अपनी विशेषताओं के साथ दूसरों को आकर्षित करती है जैसे राठी (प्रेम–मनमाथा के देवता की पत्नी)

316) रतिप्रिया – वह जो राठी को पसंद करता है

317) रक्षाकरी – वह जो रक्षा करे

318) राक्षसघनी – वह जो स्वर्ग से विमुख होकर रक्षासूत्र–ओगराती है

319) रामा – वह जो स्त्री है

320) रमणलम्पटा – वह जो अपने स्वामी से प्रेम करने में रुचि रखती है

काम्या कामकलारूपा कदम्ब–कुसुम–प्रिया ।

कल्याणी जगतीकन्दा करुणा–रस–सागरा ।। ७३।।

321) काम्या – वह जो प्रेम का रूप है

322) कामकलारूपा – वह जो प्रेम की कला का परिचायक है

323) कदम्बकुसुमप्रिया – वह जो कदंब के फूल पसंद करती है

324) कल्याणी – वह जो अच्छा करता है

325) जगतिकन्दा – वह जो दुनिया के लिए एक जड़ की तरह है

326) करुणारससागरा – वह जो दया के रस का समुद्र है

कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया ।

वरदा वामनयना वारुणी–मद–विह्वला ।। ७४।।

327) कलावती – वह जो एक कलाकार है या वह है जिसके पास अपराध है

328) कलालापा – वह जिसकी बात मुखर है

329) कान्ता – वह जो चमकता है

330) कादम्बरीप्रिया – वह जो कादम्बरी नामक शराब पसंद करती है या वह जिसे लंबी कहानियाँ पसंद है

331) वरदा – वह जो वरदान देती है

332) वामनयना – वह जिसके पास सुंदर आँखें हैं

333) वरुणीमदविह्वला – वह जो शराब से नशे में चूर हो जाता है जिसे वरुणी कहा जाता है (खुशी की शराब)

विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल–निवासिनी ।

विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ।। ७५ ।।

334) विश्वाधिका – वह जो समस्त ब्रह्मांड से ऊपर है

335) वेदवेद्या – वह जिसे वेदों द्वारा समझा जा सकता है

336) विन्ध्याचलनिवासिनी – वह जो विंध्य के पहाड़ों पर रहती है

337) विधात्री – वह जो दुनिया को ढोती है

338) वेदजननी – वह जिसने वेदों की रचना की

339) विष्णुमाया – वह जो विष्णु माया के रूप में रहती है

340) विलासिनी – वह जिसे प्यार करने में मजा आता है

पाठगत प्रश्न– 14.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. ..... दुराचार–शमनी दोषवर्जिता ।
2. सर्वशक्तिमयी ..... सद्गतिप्रदा ।
3. महारूपा महापूज्या .....–नाशिनी ।
4. महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा ..... ।
5. मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल–..... ।
6. चराचर–जगन्नाथा .....–निकेतना ।
7. सुप्ता ..... तुर्या सर्वावस्था–विवर्जिता ।
8. ..... रुद्ररूपा तिरोधान–करीश्वरी ।
9. .....–मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।
10. आब्रह्म–कीट–जननी .....–विधायिनी ।
11. नारायणी ..... नामरूप–विवर्जिता ।

आपने क्या सीखा?

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना।
- देवी ललिता के लिए प्रयोग किये गये विशेषक शब्दों का अर्थज्ञान।
- देवी ललिता की विशेषताएं।

पाठांत प्रश्न

(1) नीचे दिये गये पदों का हिन्दी का अर्थ लिखिए

a) दोषवर्जिता

b) महारूपा

c) महामन्त्रा

d) मनुविद्या

e) जगन्नाथा

f) भैरवी

g) नारायणी

उत्तरमाला

14.1

1. दुष्टदूरा
2. सर्व–मङ्गला
3. महापातक
4. महासना
5. मध्यगा
6. चक्रराज
7. प्राज्ञात्मिका
8. संहारिणी
9. भानुमण्डल
10. वर्णाश्रम
11. नादरूपा